Vol 5 Issue 1 July 2015

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.in

Impact Factor : 3.4052(UIF)
Volume - 5 | Issue - 1 | July - 2015

शरद जोशी के स्तंभ लेखन में धर्म सम्बन्धी व्यंग्य

येरावार संतोष विजयराव

सारांश :

शरद जोशी जी का नाम व्यंग्य विधा में सम्मानपूर्वक लिया जाता है और व्यंग्य विधा में उनका अत्यंत्य महत्त्वपूर्ण स्थान है। व्यंग्य को एक नया रूप और विस्तृत आकार देने का कार्य शरद जोशी ने अपने लेखनी से किया है। विशिष्ट स्थान के अधिकारी शरद जोशी ने विविध पत्रिकाओं, निबन्धों, एकांकियों, कहानियों, नाटकों, दूरदर्शन धारावाहिकों, फिल्म लेखों में अपनी व्यंग्यधर्मिता का लाजवाब परिचय दिया है। उन्होंने अपनी जीवनकाल में पत्र-पत्रिकाओं तत्कालीन समस्याओं पर करारा व्यंग्य प्रहार किया। उनकी कलम केवल समस्या का चित्रण ही नहीं करती थी बल्कि उस समस्याओं को कुरेदती थी। लोग जितना समझते हैं, शरद जोशी का साहित्य उससे कहीं ज्यादा महान एवं विशाल है।

Short Profile

Yeravara Santosh Vijayaraw is a Degalura College, degalura , Dist . Nanded .

प्रस्तावना :

भारतीय समाजव्यवस्था मूलतः धर्माश्रयी रही है। "धर्म ही परम्परा से सामाजिक जीवन के कार्यों और व्यक्ति के उद्देश्यों का निर्धारण एवं नियंत्रण करता है।"१ भारत धर्मप्रधान देश होने के कारण चिंतन और दर्शन पर धर्म का प्रारम्भ से ही प्रभाव रहा है। धर्म ने हर सामाजिक-राजनैतिक आंदोलन को भी प्रभावित किया है। धर्म को सर्वश्रेष्ठ स्थान मिलने वाले इस देश में आज धर्म का रूप विक्षिप्त हो गया है। राजनीति के स्वार्थ ने धर्म को विकृत बना दिया है। धर्म के नाम पर लोगों को लूटा और बाँटा जा रहा है। जनता धर्म और पाखण्ड में अंतर नहीं कर पाई, जिससे धर्म के ठेकेदारों ने समाज पर नियंत्रण हासिल कर लिया है। पाखण्डी साधु-संतों और धार्मिक नेताओं ने अन्धविश्वासी तथा धर्मभीरू जनता को उसकी मुक्ति का मार्ग दिखाने के नाम पर केवल लूटने का ही कार्य किया है। हर कोई अपने स्वार्थ के अनुसार धर्म को परिवर्तित कर रहा है, जिससे अनेक विकृतियों और विसंगतियों ने धर्म को घेर लिया है।

धर्म में सभ्यता, आचरण, महानता एवं मूल्यों के स्थान पर स्वार्थ, ऐय्याशी, अंधश्रद्धा, घटियापन एवं ढोंग ने प्रवेश किया है। धर्म लोगों का सहारा होता है, पथप्रदर्शक होता है, परन्तु कुछ स्वार्थी मठाधीश, भोंदूबाबा एवं धर्मगुरूओं ने उसे घिणौना बना दिना है। भौतिक सुख-साधनों को प्रधानता देना, यहाँ-वहाँ देश-विदेश घूमना, दासियों के साथ ऐय्याशी करना, धर्म के नाम पर लूटना इसे प्रधानता दी जा रही है। वर्तमान में तो सारे धर्मों के सिद्धांतों को विकृति ने घेर रखा है। दिल्ली में सेक्स रॅकेट चलाने वाला बाबा, गुजरात में लोगों को करोडों का चूना लगाने वाला जडेजा महाराज तथा तमिल मॉडल के साथ ऐय्याशी करने वालानित्यानंद महाराज जैसे स्वार्थी, ढोंगी, नीच एवं चरित्रहीन लोगों ने धर्म को शर्मसार किया है। धर्म के आड़ में सारे काले कारनामे किए जा रहे हैं। अनेक आश्रम ऐय्याशी के अड्डे बन गए हैं। धर्म ने व्यवसाय का रूप धारण कर लिया है, यही यथार्थ है।

धर्म के बदलते स्वरूप पर शरद जी ने तीव्र कशाघात कर उसे बेपर्दा किया है, ष्धर्म न हुआ, उद्योग और टेक्नोलॉजी हुई, जो बिना अंतरराष्ट्रीय सहयोग के पनप नहीं सकती। हमारे कुछ प्रतीक, जैसे राम, ओम, हरेकृष्ण, रूद्राक्ष, शिवलिंग, तुलसी-माता, योग आदि का जैसी खपत संसार के समृद्ध बाज़ारों में हैं, वैसी आजकल भारत के धार्मिक

देगलूर महाविद्यालय, देगलूर, जि. नांदेड़.

नगरों में भी नहीं है। भारतीय मठाधीश तो आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व भी लखपति थे, पर इन दिनों मामला करोड़ों से उपर हैं।"[२] अब हर महंत के पास विदेशी चेलियाँ पडी रहती हैं। भक्ति-भाव से पूजा-दर्शन को आनी वाली बहू-बेटियों, विधवाओं, माताओं को महंत, संत, मठाधीश, एवं पंडित ताकते रहते हैं। चढ़ावे और दान को निहारते रहते हैं। समान्य जनता को लूटते रहते हैं।

तीर्थों में एवं धार्मिक स्थानों पर चल रहे भ्रष्टाचार की ओर ऊँगली उठाना और संतों को नाम रखना भारत में धर्म की हानी मानी जाती है। इसीलिए लाखों के ग़बन, चोरी एवं हेराफेरी निरंतर चलती रहती है। धार्मिक उत्सवों के समय पर तथा गणेश उत्सवों के समय भगवान की पूजा से मनोरंजन के कार्यक्रम का आरम्भ होता है। सबकुछ चलता है केवल भक्ति नहीं होती। मोहर्रम, गणेश उत्सव एवं धार्मिक पर्व न हुए उधम मस्ती हो गए हैं। हमे धर्म की महान परम्परा नहीं सूझती, परन्तु हमें सतिप्रथा, बालविवाह एवं अन्धश्रद्धा सूझती है। शरद जोशी ने सतिप्रथा की भयावहता का दिल दहलाने वाला चित्रण कर क्रूर परम्पराओं की अवहेलना की है, ष्एक बार चिता पर चढ़ावा देने के बाद, वहाँ उपस्थित भीड़ उसे उतरने नहीं देती। भागने नहीं देती। ढ़ोल बजाते हैं, जय-जयकार का भयंकर शोर होता है, उस स्त्री पर पत्थरों की तरह नारियल फेंके जाते हैं, वह लपट लगने से पूर्व घायल और बेहोश हो चुकी होती है। उसकी चीख उस शोर में, बाजे में, हल्ले में कोई नहीं सुनता। कुछ लोग आसपास रहकर यह ध्यान रखते हैं कि औरत जान बचाने में सफल हो हिन्दू धर्म की नाक न कटवा दे।"[३] इस तरह शरद जी ने सतिप्रथा के नाम पर होने वाले खुले हत्याकांड को उघाड़ा है। सतिप्रथा औरत की कमजोरी को महिमान्वित करने का दुष्ट नाटक है। हम ढोल, मँजीरे, शंख बजा रहे हैं। देखो, एक औरत आदमी के साथ मर गई। स्त्री शरीर को दासी का शरीर माना जाता है। विधवा कह के उस की निरर्थकता को सिद्ध किया जाता है। परन्तु उसके दूसरे विवाह का समर्थन नहीं किया जाता। स्त्री विधवा हो जाती है तो उसकी उत्पादकता समाप्त हो जाती है। इसी कारण उसे जिन्दा जलाया जाता है।

हिन्दू धर्म में व्याप्त विकृतियों को उघाड़ के साथ-साथ हिन्दू धर्म के लिए उन्होंने उपदेश भी दिया है। हिन्दुओं द्वारा छूने और व्यवहार किए जाने योग्य न माने जाने के कारण ही तो वे हरिजन माने जा रहे हैं। इसीलिए उनका और उनके आरक्षण का विरोध जिस घृणा को विकसित कर रहा है, वह हिन्दुओं के टुकडे-टुकडे कर देगा। ष्हरिजनों, आदिवासियों और निम्न कहलाने वाली जातियों को समान रूप से हिन्दू न मानना, एक ऐसी कुल्हाडी पैर पर मारना है, जो पूरे धर्म को अपंग कर देगी। वह जीवित रहेगा, पर चल नहीं सकेगा।"[४] इससे यह बात स्पष्ट होती है कि निम्न जातियों के लोगों का अपमान हिन्दू-धर्म की मूर्खता हो सकती है। यही लोग सच्चे अर्थ में धर्म की सुरक्षा करते हैं। जो युग की वास्तविकता और आवश्यकता को नहीं समझता, वह धर्म नहीं होता।

शरद जी ने ब्राह्मणों को प्रेरित कर अतित की याद दिला सर्वहारा वर्ग को शोषणमुक्त करने का आह्वान किया है। ज्ञान का प्रसार ब्राह्मण का धर्म है। शोषितों का नेतृत्व कर उन्हें शिक्षा देने का उपदेश किया है। ष्ब्राह्मण पुत्रों, उठो और उन्हें ज्योति दो, जो वह चाहते हैं। उनके गले लगो। शोषितों का नेतृत्व करो, उन्हें शिक्षा दो। उनके शोषण के पाप के भागी मत बनो।"[५] इस तरह शरद जी ने धार्मिक विषमता समाप्त करने का सराहनीय प्रयास किया है। अन्याय, हिंसा, मानवता की हत्या आदि से मनुष्यों की भावना को ठेस नहीं पहुँचती। तभी ठेस पहुँचती है जब विषय धार्मिक हो। लोगों की इस खोखली मानसिकता और सोच-विचार न करने की विवशता का यथार्थ चित्रण किया है। "मस्जिद के सामने कोई मरा सूअर या मंदिर के सामने गाय मारकर डाल दे तो बजाय इस नतीजे पर पहुँचने के कि यह किसी बदमाश की हरकत है, जो दंगे करवाना चाहता है, लोग आपस में चाकू-छुरी चलाने पर उतर आएँ। यदि बंदा तय ही कर ले कि उसे तो भड़कना है तो पत्ते के खडकने का बहाना काफी होता है।"[६] हजारों साल पुराना सेवाव्रत, समृद्ध और सुसंस्कृत देश दो हिस्सों में बँट गया। इसके बावजूद आज स्थितियाँ और अधिक अंधकारपूर्ण हो गई हैं। इतनी घटनाओं से गुजरकर न पार्टियाँ कुछ सीखती हैं, न धर्म कुछ सीखते हैं और न मनुष्य कुछ सीखता है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि, शरद जी ने हिन्दू एवं मुस्लीम धर्म के उत्सवों में व्याप्त अराजकता को उजागर किया है। हिन्दू धर्म में व्याप्त कुरीतियों, परम्पराओं एवं अन्धविश्वासों पर करारा व्यंग्य बाण कसा है। मठाधीश, संत एवं पंडितों द्वारा धर्म के नाम पर लोगों को फँसाया जा रहा है एवं लूटा जा रहा है। धार्मिक खोखलेपन को उजागर करते हुए

सतिप्रथा की कडी आलोचना की है। उन्होंने धार्मिक विषमता नष्ट कर समानता स्थापित करने का प्रयत्न किया है। हिन्दू धर्म के लोगों को अगाह कर उनकी खोखली मानसिकता को बेपर्दा किया है।

संदर्भ सूची :

१) छायावादोत्तर कविता में समाज-समीक्षा, अनिल राकेशी, पृ.२५२
२)शरद जोशी, प्रतिदिन, खंड-१, पृ.१६४
३) शरद जोशी, प्रतिदिन, खंड-२, पृ.२०६
४) वही, पृ.३६६
५) शरद जोशी, प्रतिदिन, खंड-३, पृ.१८६
६) शरद जोशी, प्रतिदिन, खंड-२, पृ.२७६

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.in